''संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों की समायोजन की समस्या तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

"A Study of Adjustment Problems Faced by the Students Coming from Joint and Nuclear Families and its Effect on Their Academic Achievement."

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय

गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर

को

पी-एच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोधकर्त्री :

संगीता गुप्ता

शोध छात्रा

iase
Deemed
university

शोध निर्देशिका :

डॉ. (श्रीमती) मनोज

आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय

सरदारशहर, जिला-चूरू (राजस्थान) - 331401

2015

शोध – प्रारूप

1. शोधकर्त्री का नाम : संगीता गुप्ता

2. शोध का शीर्षक :

''संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों की समायोजन की समस्या तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

"A Study of Adjustment Problems Faced by the Students Coming from Joint and Nuclear Families and its Effect on Their Academic Achievement."

3. अध्ययन का स्थान : आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

4. अध्ययन का क्षेत्र : शिक्षा मनोविज्ञान।

1 – प्रस्तावना :–

भारतीय समाज और संस्कृति अति प्राचीन है। इसमें अनेक विविधताएँ और जटिलताएँ व्याप्त हैं। भारत भूमि पर अनेक प्रजातियों एवं संस्कृतियों का आगमन होता रहा है और अनेक सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्थाओं ने इसी धरती पर जन्म लिया है। अतः भारत अनेक समाजों, सभ्यताओं एवं संस्कृतिओं का मिश्रित पात्र रहा है। यही कारण है कि भारत में अनेक विविधताएँ होते हुए भी एकता के सूत्र विद्यमान है। इस एकता एवं विविधता ने ही भारतीय समाज को एक निरन्तरता प्रदान की है। सिन्धु घाटी की सभ्यता से लेकर वैदिक व उतर वैदिक काल तथा महाकाव्य, जैन व बौद्ध तथा मुगलकाल, ब्रिटिशकाल और उसके पश्चात् स्वतंत्र भारत तक भारतीय कला, धर्म, समाज व्यवस्था में सदैव ही सात्मीकरण और सम्मिश्रण की प्रक्रिया के कारण सातत्य बनी रही है।

भारतीय समाज और संस्कृति की अपनी एक विशिष्ट जीवन विधि रही है। यद्यपि समय-समय पर बाहर से आने वाली संस्कृतियों के सम्पर्क के कारण इनमें परिवर्तन एवं संशोधन होते रहे है। समन्वय और सहिष्णुता की प्रकृति के कारण धर्म, संगीत, चित्रकला, वास्तुकला, साहित्य और समाज व्यवस्था में एक तरफ जहाँ अनेक विविधताएँ पनपी वहीं दूसरी तरफ भारतीय समाज समृद्ध भी हुआ तथा अपने निजी विचारों एवं सिद्धान्तों के कारण भारतीय परम्परा एवं जीवन विधि बनी रही।

संस्कृति के सभी स्तरों में चाहे उन्हें उन्नत कहा जाये या निम्न, किसी न किसी प्रकार का पारिवारिक संगठन अनिवार्यतः पाया जाता है। प्राणी शास्त्रीय सम्बन्धों के आधार पर बने हुए समूहों में परिवार सबसे छोटी इकाई है। प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी परिवार का सदस्य होता है। ''समाज में परिवार ही अत्यधिक महत्वपूर्ण समूह है। मानव की स्वस्थ सामाजिक संस्थाओं में परिवार एक आधारभूत और सर्वव्यापी सामाजिक संस्था है। परिवार मानव जाति के आत्म संरक्षण, वंशवृद्धि और जातीय जीवन की निरन्तरता बनाये रखने का प्रमुख साधन है। मनुष्य मरणशील है, किन्तु मानव जाति अमर है, मृत्यु और अमरत्व इन दो विरोधी अवस्थाओं का समन्वय परिवार में ही हुआ है।''[1]

[1] गुप्ता, एल.एम. ''भारतीय समाजशास्त्र'' पृ.सं. 321

भारतीय समाज व्यक्ति के विकास में निरन्तर सहायक रहा लेकिन समाज का बिखराव व परिवारों का विघटन होना यह भारतीय संस्कृति की विडम्बना है उच्चवर्ग के परिवार में रहने वाले लोगों के रहन, सहन, तोर-तरीके, शिक्षा, वातावरण व बालक-बालिकाओं के उत्तम संस्कार पर सम्पन्नता का प्रभाव अधिक रहता है जिससे उच्चवर्ग या उच्चकुलों के लोग समाज के विकास व संस्कृति के विकास में अच्छा योगदान देते हैं। विद्यालयों में उच्च परिवारों के विद्यार्थियों में समायोजन करने की अच्छी क्षमता का विकास हो जाता है जिससे घर का वातावरण बालक को समायोजन करने व अच्छी तरह विकास करने में सहायक होता है। अच्छे संस्कारी परिवार के द्वारा बालक में नैतिकता व मानवीय मूल्यों का विकास होता है।

परिवारों में बालकों पर माता-पिता द्वारा अनुशासन के रूप में प्रतिबन्ध रखा जाता हैं। बालक अभाव की जिन्दगी महसूस करता हैं। पारिवारिक स्थिति, वातावरण, बालक के विकास व स्थिरता में समय के साथ समायोजन करना सीख जाता जो सुविधा उच्च वर्ग में विद्यार्थी को मिलती है वह सुविधा मध्यम वर्ग के परिवारों में कम होती है। विनम्रता, समर्पण, नैतिकता के गुण मध्यमवर्गीय परिवारों के बालक व बालिकाओं में होते हैं। मध्यवर्गीय समाज में माताओं का नौकरी-व्यवसाय आदि में कार्यरत होना परिवार के ढाँचे में एक अन्य परिवर्तन है। बच्चें माता के साथ अधिक समय नहीं गुजार पाते और शिशु भी बाहर शिशु सदनों की देखरेख में छोड़ दिये जाते है। आज स्थिति यह है कि बच्चों की शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति तो शायद पहले से अधिक अच्छे ढंग से हो जाती है किन्तु उनका हल्का प्यार, मान्यता, शैक्षिक उपलब्धि आदि भी जो मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ हैं, वे कुंठित हो रही हैं।"[2]

निम्न वर्ग के परिवार का वातावरण अभावों भरा होता है। बालक-बालिकाओं में समायोजन करने की क्षमता कम विकसित होती है। बालकों में उत्तम संस्कार एंव मूल्यों के विकास पर, विद्यालय वातावरण व सुसंस्कारित घरेलू वातावरण का प्रभाव पड़ता है। घर का अच्छा वातावरण बालक को समायोजन करने व उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने में सहायक होता है। समाज को उससे बहुत अपक्षाऐं होती हैं। जीवन में आने वाली अनेक चुनौतियों का उसे सामना करना पड़ता हैं। अतः एकल एवं संयुक्त परिवार के बालक-बालिकाओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का

[2] मणि शारदा "किशोर मनोविज्ञान हिन्दी माध्यम, निदेशालय, 1993 पृ.सं.47

प्रश्न शोधकर्त्री की दृष्टि में महत्वपूर्ण हो जाता हैं। प्राचीन युग में संयुक्त परिवार की प्रथा थी। इन परिवारों में माता–पिता, भाई–बहन, चाचा –चाची, ताऊ–ताई, भतीजे–भतीजियाँ तथा दादा–दादी आदि सभी सदस्य एक साथ सम्मिलित रूप से रहते थे। इन परिवारों के बड़े सदस्य बालकों को समय–समय पर हर प्रकार की शिक्षा देते रहते थे। उस युग में केवल संयुक्त परिवार ही बालक की नैतिक, धार्मिक, व्यावसायिक तथा सामाजिक आदि सभी प्रकार की शिक्षा का केन्द्र माना जाता था।"[3]

वर्तमान युग में संयुक्त परिवार का स्थान एकांकी परिवार ने ले लिया हैं। उसके अनेक कार्यो को भी उसकी सामाजिक संस्थाओं ने सम्भाल लिया है, पर इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि आधुनिक परिवार पर बालक के पालन–पोषण तथा शिक्षा का उत्तरदायित्त्व नहीं रहा है। वास्तविकता यह है कि परिवार एक ऐसा आधारभूत ढाँचा है, जिसका बालक की शिक्षा में अब भी महत्व कम नहीं हुआ हैं। आज बाल शिक्षा एकांकी हो गई है। आज का बालक क्या बोलना चाहता है, क्या कहना चाहता है, क्या सोचता है, क्या रचता है, कैसे रंगों का संयोजन करता है, कैसे संगीत के स्वर से अपने जीवन में एक नई लय का सृजन करता है। इन सबको सुनने समझने का समय विद्यालयों, शिक्षकों और अभिभावकों को नहीं है।

एकल परिवार व संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं हैं। एकल परिवार में बालक उदास मन से रहता है। लेकिन संयुक्त परिवार में दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ–ताई आदि के साथ रहते तो बालक की परवरिश भी अच्छी होती है, बालक पूर्ण रूप से परिवार के साथ समायोजन करना सीख लेता है। एक व्यक्ति जिस प्रकार से अपना प्रत्यक्षीकरण करता है अथवा जिस ढंग से अपने को देखता है उसे ही हम उस व्यक्ति का समायोजन कहते हैं। एकल व संयुक्त परिवार के बालकों में समायोजनशीलता अच्छी होती है। जो बालक समायोजित होता है तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी होती है।"[4]

वर्तमान भारतीय समाज में परिवार महत्वपूर्ण स्थान रखते है। आज का बालक कल के समाज का भावी नागरिक है। जो बालक नवीन वातावरण से अपना समायोजन नहीं कर पाते उसका व्यवहार नैराश्य के कारण असामान्य हो जाता है।

---

3 Remmers, Ryden, Morgan, 1954 "Introduction to education Psychoogy" Harper & brothers, New york, pp-114

4 भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जुलाई–दिसम्बर 2004, वर्ष –23, अंक–2 पृ.सं. 47

ऐसे बालक संवेगात्मक दृष्टि से अस्वस्थ कहे जा सकते हैं, और ऐसे बालकों को विभिन्न क्षेत्रों के समान ही शिक्षा के क्षेत्रों में भी अनेक समस्याों का सामना करना पड़ता है। सामान्य व्यवहार जानने के पश्चात् वे असामान्य विद्यार्थियों के आवश्यक समायोजन में सहयोग दे सकेगें। छात्र-छात्राओं को समायोजन स्थापित करने के लिए उचित निर्देशन की आवश्यकता महसूस होने लगती है। बालक के लिए परिवार की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि बालक अपने जन्मकाल से ही परिवार में रहता है और उसके व्यक्तित्व के निर्माण में परिवार का वातावरण स्वस्थ हो तो बालक एक अच्छा नागरिक बनता है और यदि परिवार का वातावरण दूषित होगा तो उसकी समायोजन क्षमता व शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होगी। एकल परिवार व संयुक्त परिवार से बालक में संस्कृति व नवीन परम्पराओं का विकास होता है। बालक का सर्वांगीण विकास के लिए संयुक्त परिवार का होना अत्यंत आवश्यक है।"[5]

घर के वातावरण से ही बालक में ही भाईचारे एवं सौहार्द्र की भावना का विकास किया जाता है, इसलिए कहा जा सकता है कि परिवार ही बच्चे की प्राथमिक पाठशाला है। पारिवारिक वातावरण बच्चे के चरित्र निर्माण में सहायक है। अनुशासन, कर्त्तव्यपरायणता और मानवता के गुणों के विकास के लिए माता-पिता से अच्छा शिक्षक और कौन हो सकता है? प्रस्तुत शोध संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों की समायोजन की समस्या तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन को शोधकर्त्री ने अपने शोध का विषय बनाया हैं।"[6]

2. <u>सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :-</u>

(पूर्व में किए गए अध्ययनों का पुनरावलोकन)

1. **विश्नोई, कविता** (2000) ने ***''लखनऊ शहर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय का शैक्षिक निष्पति के सम्बन्ध में अध्ययन''*** विषय पर अपने शोध कार्य में निष्कर्ष पाया कि - जो बालक अच्छा आत्म-सम्प्रत्यय रखते हैं, उनकी विद्यालयी उपलब्धि मध्यम आत्म-सम्प्रत्यय रखने वाले बालकों की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार जिन बालिकाओं का अच्छा आत्म-सम्प्रत्यय हैं, उनकी विद्यालयी उपलब्धि भी मध्यम आत्म-सम्प्रत्यय रखने

---

[5] गुप्त, डॉ. नत्थूमल-''संस्कृति के सात सोपान''

[6] मोदी, विकास : (नवम्बर 2002) ''नैतिक शिक्षा'' शिविरा पत्रिका, शिक्षा विभाग (राज.) पृ. 14, 15

वालों की तुलना में अधिक है। बालक व बालिकाओं का आत्म-सम्प्रत्यय अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे उनकी विद्यालयी उपलब्धि बढ़ सके।

2. *विश्वकर्मा, विजयप्रताप* (2001) **ने- ''सामान्य एवं दृष्टिबाधित बालक, बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''** विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध किया और निष्कर्ष में पाया कि - दृष्टिबाधित बालक एवं बालिकाओं की समायोजन प्रवृत्तियाँ उल्लेखनीय ही नहीं बल्कि सामान्य बालक-बालिकाओं की अपेक्षा श्रेष्ठतर पायी गयी। यद्यपि दोनों ही समूहों में विभिन्न प्रकार की समायोजन समस्याएँ यथा समाज विरोधी प्रवृत्ति, प्रत्याहार प्रवृत्ति, घबराहट की प्रवृत्ति, सामाजिक कौशल, आक्रामक प्रवृत्ति एवं अपर्याप्तता की भावना से सम्बन्धित पायी गई। दृष्टिबाधित बालकों में घबराहट की प्रवृत्ति एवं अपर्याप्तता की भावना एवं बालिकाओं में अपर्याप्तता की भावना सहित प्रत्याहार के स्तर पर समायोजन की समस्या सामान्य बालक बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पायी गई।"[7]
3. *अग्रवाल, सुभाष चन्द्र* (2002) **ने - ''अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवम् सामान्य जाति के छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''** विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध किया और निष्कर्ष में पाया कि- अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के छात्रों के मध्य समायोजन में सार्थक अन्तर है। सामान्य जाति के अधिकांश छात्रों का समायोजन सामान्य से अधिक है जबकि अनुसूचित जाति के अधिकांश छात्रों का समायोजन सामान्य से कम है। पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति के छात्रों के मध्य समायोजन में सार्थक अन्तर है। जहाँ पिछड़ी जाति के छात्रों का समायोजन औसत से कम है, वहीं सामान्य जाति के अधिकांश छात्रों का समायोजन औसत से अधिक है। समायोजन की विभिन्न श्रेणियों में दोनों प्रकार के छात्रों की आवृति लगभग बराबर है।"[8]
4. *सिंह, सीमा* (2004) **ने- ''इलाहाबाद मण्डल के माध्यमिक स्तर के गैर अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन जाति के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की**

[7] भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2000, वर्ष-17, Vol-2 पृ.सं. 25
[8] भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2000, वर्ष-19, Vol-2 पृ.सं. 22

समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन'' किया। अध्ययन में पाया कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थी विद्यालय की परिस्थितियों से समायोजन करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। यद्यपि सरकार अपनी ओर से हर सम्भव प्रयास करती है कि उन्हें पर्याप्त सहायता देकर समाज की मुख्य धारा से जोड़ दिया जाए। किन्तु कुछ लाल फीताशाही और कुछ उनकी समाजिक कुप्रथाओं और अन्ध विश्वासों के कारण वे समुचित रीति से लाभान्वित नहीं हो पाते तथा समायोजन करने में असमर्थ प्रतीत होते हैं।''[९]

5. *माली राजकुमार* (2004) **ने–''संवर्ग एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तर्क योग्यता, बौद्धिक योग्यता, समायोजन क्षमता एवं विद्यालयी निष्पति का तुलनात्मक अध्ययन''** विषय पर अध्ययन किया। इन्होनें अपने अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया कि सवर्ण एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता में सार्थक अन्तर हैं। बौद्धिक योग्यता के सन्दर्भ में सवर्ण एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। समायोजन के सन्दर्भ में राजस्थान प्रान्त के सवर्ण पर एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की सम्पूर्ण समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।''[10]

6. **पाल, एस. के. एवं खान, मोहसिन** (2005) ने ***''छात्र – छात्राओं के प्रतियोगितात्मक व्यवहार का शैक्षणिक उपलब्धि एवं जोखिम उठाने सम्बन्धी योग्यता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''*** विषय पर शोध कार्य में भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (जनवरी – जून 2005) में यह निष्कर्ष निकाला कि छात्र– छात्राओं के प्रतियोगितात्मक व्यवहार एवं शैक्षणिक उपलब्धियों में धनात्मक सह सम्बन्ध है। अतः स्पष्ट है कि छात्र–छात्राओं में प्रतियोगितात्मक व्यवहार बढ़ने पर शैक्षणिक उपलब्धि भी बढ़ती है। प्रतियोगितात्मक व्यवहार कम होने पर शैक्षणिक उपलब्धि भी कम होती है।

7. ***नबीला, सैयद एवं कुमारी, भारती*** (2005) **ने –''किशोरों में अधिगम के तरीके व समायोजन का अध्ययन''** विषय पर शोधकार्य कर निष्कर्ष रूप में पाया कि– छात्र व छात्राओं में सामाजिक, सांवेगिक व शैक्षिक समायोजन बहुत अच्छा

[9] **भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2000, वर्ष–23, अंक–2, जुलाई–दिसम्बर, 2004 पृ.सं. 47**
[10] Mali, Rajkumar(2004) BTTC GVEM Sardarshahr Ph.D. Thesis

पाया जाता है। बालक बालिकाओं में ग्रहण करने की क्षमताओं में भिन्नता पाई गई। अधिगम के तौर तरीकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। विभिन्न लिंगों के विभिन्न वातावरण में समायोजन एवं अधिगम शैलियों में नकारात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया। विभिन्न स्थानों के लोगों की अधिगम शैलियों व समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।"[11]

8. *तोमर, जगतपाल सिंह व त्रिपाठी, बृजेशचन्द्र* (2005) **ने – ''बी.एड. विद्यार्थियों की समायोजन के प्रति खोज का अध्ययन''** शीर्षक पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध में पाया कि- शासकीय अनुदान प्राप्त संस्थाओं की तुलना में स्ववित्तपोषित संस्थाओं का गृह एवं संवेगात्मक समायोजन अच्छा पाया गया। लेकिन शासकीय अनुदान प्राप्त संस्थाओं का सामाजिक समायोजन स्ववित्तपोषित संस्थाओं से अच्छा पाया गया। शासकीय अनुदान प्राप्त ग्रामीण व शहरी संस्थाओं के गृह सामाजिक संवेगात्मक, समायोजनों में अन्तर पाया गया। स्ववित्तपोषित ग्रामीण व शहरी संस्थाओं के गृह सामाजिक संवेगात्मक समायोजन में अन्तर पाया गया। शासकीय अनुदान प्राप्त संस्थाओं में अध्ययनरत् महिला व पुरूषों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर पाया गया। स्ववित्तपोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् महिला व पुरूषों के स्वास्थ्य व संवेगात्मक समायोजन में अन्तर पाया गया।"[12]

9. *शर्मा, सरिता* (2006) **ने –''महाविद्यालयी शिक्षकों द्वारा अवलोकित स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के संस्थागत वातावरण तथा उनकी समायोजन समस्याओं का सम्बन्धः एक अध्ययन''** विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया और अध्ययन में पाया कि महाविद्यालयी शिक्षकों द्वारा अवलोकित स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के संस्थागत वातावरण तथा उनकी समायोजन समस्याओं में लिंग भेद, आर्थिक सामाजिक स्तर तथा क्षेत्र विशेष के परिप्रेक्ष्य में अन्तर पाया गया। पुरूष शिक्षक, महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक समायोजित थे।"[13]

---

[11] भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2000, VOL-24, अंक–1, जनवरी–जून, 2005 पृ.सं. 75–82

[12] D.E.I. Foera, Dyal Bagh Edu. Institute, Dyal Bagh,Agra Inaugural Issue, Jan.2008,

[13] D.E.I. Foera, Dyal Bagh Edu. Institute, Dyal Bagh,Agra Inaugural Issue, Jan.2008, pp14

10. *त्रिपाठी, ब्रजेशचन्द्र* (2008) **ने – ''बी.एड. महाविद्यालयों के विद्यार्थी अध्यापकों के समायोजन की जाँच''** विषय पर शोध कार्य किया। इन्होंने अध्ययन में पाया कि नगरीय, ग्रामीण, पुरूष–महिला, कला–विज्ञान चरों पर आधारित तुलनात्मक विवेचन से समायोजन में वरीयता क्रम से सामाजिक, सांवेगिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में सार्थक अन्तर पाया गया।''[14]

11. *कपूर डॉ. अर्चना, श्रीवास्तव निधि* (2008) **ने – ''कार्यरत महिलाओं के वैवाहिक समायोजन का बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व पर प्रभाव''** विषय पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च वैवाहिक समायोजन वाली कार्यरत महिलाओं के व्यक्तित्व कारक सम्बन्धित गुण (संवेदनशील, अत्यधिक सुरक्षा की भावना एवं नाजुक प्रवृत्ति) बालकों में बालिकाओं की अपेक्षा उत्तम स्तर में पाये गये। व्यक्तित्व कारक क्यू 3 (नियंत्रण, अनुशासन एवं आत्म–सम्मान) के सदर्भ में बालक औसत से निम्न स्तर के पाये गये एवं बालिकाएं निम्न स्तरीय पायी गयी। व्यक्तित्व कारक सम्बन्धित विशेषता– मूर्त चिन्तन एवं साहित्यिक वर्णन की क्षमता बालक एवं बालिकाओं दोनों में निम्न कोटि की पायी गयी। निम्न वैवाहिक समायोजन वाली कार्यरत महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं दोनों में बुद्धिमता निम्न स्तरीय पायी गयी। निम्न वैवाहिक समायोजन के संदर्भ में बालिकाएं बालकों की अपेक्षा उत्तेजनापूर्ण, धैयशाली, क्रियाशील, विचारशील एवं दायित्त्वों का निर्वाह करने वाली पायी गयी।''[15]

12. *तिवारी सारिका, पांडे डॉ. राजेश* (2009) **ने – ''विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता का अध्ययन एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण''** पर शोध कार्य किया । इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी विद्यालयों एवं ग्रामीण विद्यालयों के उ. मा. स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं हैं अर्थात् विद्यार्थियों की समायोजन इस बात से प्रभावित नहीं होती है

---

14 भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जनवरी–जून 2008, वर्ष–27, अंक–1, पृ.सं. 49–53

15 Buch, M. B, "Fifth Surevy of Research in Education", Vol – IV (1991)

कि वे शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् हैं या ग्रामीण विद्यालयों में अर्थात् समायोजन क्षेत्र विशेष से अप्रभावित रहता है।"[16]

13. हुड्डा, राजाराम (2012) **ने ''स्नातक स्तर के आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि, जीवन संतुष्टि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन''** शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया तथा निष्कर्ष में पाया कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं जीवन संतुष्टि का सामाजिक वातावरण पर विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार प्रभाव पड़ता है।[17]

3. अध्ययन का महत्व :–

प्रत्येक शोध अध्ययन का कोई न कोई महत्व अवश्य होता है। समस्या के महत्व को देखकर ही उसका चयन किया जाता है, जैसा कि इस अध्ययन के शीर्षक से ही स्पष्ट हो जाता है कि इस अध्ययन के अन्तर्गत संयुक्त एवं एकल परिवारों के विद्यार्थियों की समायोजन की समस्या एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभावों को जानने का प्रयास किया जायेगा।

यह समाज विश्व के प्राचीनतम समाजों मे से एक है, किन्तु वर्तमान स्वरूप वैसा ही नहीं है जैसा प्रारम्भ में रहा है। यह भी परिवर्तन के प्रवाह में बदलता रहा तथा इसकी संस्थाओं, परम्पराओं, अर्थव्यवस्था, कला, राजनैतिक एवं शैक्षणिक व्यवस्था पारिवारिक एवं जातीय व्यवस्था, साहित्य एवं संस्कृति में समय के साथ बदलाव आता रहा है। यहाँ सांस्कृतिक बहुलतावाद को अनेक रूपों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए एक तरफ बहुत घनी, उच्च जाति और उच्च वर्ग के लोग है; तो दूसरी तरफ अत्यधिक निर्धन, निम्न जाति के लोग है। विभिन्न जातियों, धर्म, क्षेत्र एवं भाषाओं के सम्बन्ध समूह सारे देश में फैले हुए हैं। बहुसंख्यक समूह अनेक सम्प्रदायों, जातियों, गोत्रों और भाषाओं में विभक्त है। अपने सदस्यों के लिए अच्छी शिक्षा रोजगार और जीवन स्तर प्राप्त नही हैं, इसलिए वे समान न्याय से वंचित है। इस प्रकार की असमानता स्वयं भारतीय समाज की देन है, जिसके कारण समय–समय पर तनाव एवं संघर्ष पैदा होते रहते हैं, परस्पर मानसिक तनाव एवं

[16] Buch, M. B, "Second Surevy of Research in Education", Vol – II (1982) NCERT
[17] हुड्डा, राजाराम (2012) – पी–एच.डी. शोध कार्य, आईएएसई मान्य विश्वविद्यालय, सरदारशहर, चूरू

कुण्ठाएँ बढ़ती हैं। इन कारणों से भारत की आन्तरिक एकता, समन्वित चेतना और भारतीयता की भावना को गहरा आघात लगा है। यह स्थिति, भारतीय समाज की संरचना के स्वरूप और वास्तविकता के बीच भेद के कारण उत्पन्न हुई है।[18]

मानसिक तनाव और समाज के दबाव विभिन्न प्रकार की समस्याओं को जन्म देते हैं। इनमें से कुछ समस्याएँ तो जीवनकाल में सुलझ जाती हैं, किन्तु कुछ ऐसी होती हैं, जो कि व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव डालती हैं, और उसके व्यक्तित्व को अव्यवस्थित बना देती हैं। ऐसी दशा में छात्र-छात्राओं को समायोजन स्थापित करने के लिए उचित निर्देशन की आवश्यकता महसूस होने लगती है। किशोरावस्था में छात्र-छात्राओं में अनेक महत्वाकांक्षाएँ जन्म लेती हैं। वे अपने आर्थिक, सामाजिक व मानसिक तुष्टि के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। उनमें से कई जो अपने आन्तरिक तथा बाह्य योग्यताओं एवं परिस्थितियों से पूर्ण परिचित न होने के कारण अपनी योजनाओं में असफल रहतें हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनका परिश्रम, समय तथा धन बेकार में जाता है। ऐसे छात्र एवं छात्राएँ अपने आप को जीवन व समाज में समायोजित नहीं कर पाते हैं, उनमें शैक्षिक उपलब्धि का भी ह्रास होता है।

बालक जिस वातावरण में रहता है वह इसके लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। उसकी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति वातावरण द्वारा होती है चाहे वह छात्रावास में हो, या परिवार में, दोनों का ही वातवरण उसके समायोजन को प्रभावित करता है। मनुष्य के व्यक्तित्व को समायोजन, परिवार साहचर्य, सामाजिक भौगोलिक वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, छात्रावास का वातावरण आदि सभी घटक प्रभावित करते है। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आज के विद्यार्थी समायोजन की समस्याओं से ग्रसित हैं।

किशोरावस्था तक पहुँचते-पहुँचते बालक के मन में यह प्रश्न उठता है कि ''मैं क्या हूँ? मुझे भावी जीवन में क्या करना है, क्या बनना है?'' आदि। अधिकांश किशोरों के मस्तिष्क में यह प्रश्न समय-समय में उठते हैं, परन्तु अधिकांश को इसका कोई निश्चित व ठोस उत्तर प्राप्त नही होता है। इसका कारण उन्हें उचित परामर्श प्राप्त नही होना भी है, फिर भी अपनी सीमा व शक्ति के अनुसार कुछ योजना बनाते है। परन्तु जीवन में घटने वाली अनेक प्रकार की घटनाएँ, सम-विषम

---

18 प्रो. देसाई, ए..आर. - ''भारत में शहरी परिवार और परिवार नियोजन''

परिस्थितियाँ आदि उसे प्रभावित करती हैं। इन्हीं आवश्यकताओं के निराकरण हेतु शोधकर्त्री ने इस विषय के अध्ययन की आवश्यकता महसूस करते हुए अपने अध्ययन हेतु चयनित किया है।

4. <u>अध्ययन का औचित्य</u> :-

भारत में सामाजिक संस्तरण अति प्राचीनकाल में वर्ण पर आधारित था। जब वर्णो से जाति व्यवस्था का विकास हुआ तो जाति ही संस्तरण का आधार बन गई। आज स्तरीकरण के पुराने आधार बदल रहें है। औद्योगीकरण के कारण विभिन्न जातियों के व्यक्ति एक साथ उद्योगों में काम करतें हैं। नगरीकरण के अन्तर्गत ग्रामों से लोग काम की तलाश में नगरों में जाकर बस गये है जहाँ जाति व्यवस्था का कुछ भिन्न रूप देखने को मिलता है। जाति का प्रमुख आधार धर्म रहा है और धर्म निरपेक्षवाद के कारण यह आधार कुछ कमजोर पड़ा है।

प्रस्तुत विषय का शोधकार्य हेतु चयन इसलिए और भी उचित है इन्हीं प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए प्रस्तुत अध्ययन कार्य किया गया तथा साथ ही शोधकर्त्री के द्वारा सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया और अध्ययनों के अवलोकन में यह पाया गया है कि यद्यपि देश व विदेश में परिवारों के बारे में व समाज में विभिन्न वर्गों के लोगों व विद्यार्थियों के सम्प्रत्यों को आधार बनाकर विविध शोधग्रन्थ एवं शोधपत्र प्रस्तुत किये गये है। अभी तक पूर्ण किये गये अध्ययनों का पुनरावलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि ऐसा कोई अध्ययन प्रकाश में नहीं आया है जो इस शीर्षक पर तीनों चरों को एक साथ लेकर किया गया है। शोधकर्त्री ने संयुक्त एवं एकल परिवारों के विद्यार्थियों की समायोजन समस्या एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन शीर्षक पर शोध करने का निश्चय किया है कि इस अध्ययन के द्वारा प्राप्त निष्कर्ष निश्चित रूप से शिक्षा जगत को अल्पमात्रा में योगदान अवश्य करेगा।

5. समस्या कथन :–

''संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों की समायोजन की समस्या तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

"A Study of Adjustment Problems Faced by the Students Coming from Joint and Nuclear Families and its Effect on Their Academic Achievement."

6. शब्दों का परिभाषीकरण :–

संयुक्त परिवार :–

एक संयुक्त परिवार में तीन या तीन से अधिक पीढ़ियों के सदस्य साथ साथ एक ही घर में निवास करते है। उनकी सम्पति सामूहिक होती हैं। वे एक ही रसोई में बना भोजन करते है, सामूहिक पूजा में भाग लेते हैं, और परस्पर किसी न किसी नातेदारी व्यवस्था से सम्बन्धित होते हैं। संयुक्त परिवार के सदस्य एक दूसरे के प्रति अधिकारों और दायित्व को निभाते हैं। दूबे के अनुसार **''यदि कई मूल परिवार एक साथ रहते हो और उनमें निकट का नाता हो, एक स्थान पर भोजन करतें हों और एक आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करते हो तो उन्हें उनके सम्मिलित रूप में संयुक्त परिवार कहा जाता है।'' संयुक्त परिवार के मूल में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परिवार के सदस्य एक ही छत के नीचे रहें और आपसी समझ और सहयोग से एक-दूसरे की मदद करें।''**[19]

एकल परिवार :–

एकल परिवार आधुनिक औद्योगिक समाजो की प्रमुख विशेषता है। औद्योगीकरण और नगरीकरण के बढ़ने के साथ साथ इस प्रकार के परिवारों की संख्या बढ़ती जा रही है। जहाँ कृषि प्रधान समाजों में संयुक्त परिवार व्यवस्था की प्रधानता पाई जा रही है, वहीं औद्योगिक समाजों में केन्दीय या नाभिक परिवारों की। आज की बदली हुई परिस्थितियों में परिवार की संयुक्तता को बनाये रखना कठिन हो गया है। आधुनिक सभ्यता एवं संस्कृति के प्रसार तथा भौतिकवादी एवं व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के विकास ने एकाकी परिवारों को बढावा दिया है। यही कारण

[19] ''सामाजिक मानवशास्त्र'' पृ. सं. 62

है कि संयुक्त परिवारों में रहने वाले बहुत से लोग भी आज भी एकांकी या नाभिक परिवार स्थापित करने की दृष्टि से सोचतें है।[20]

केन्द्रीय या नाभिक परिवार, परिवार का सबसे छोटा रूप है। एक पुरूष, स्त्री तथा उनके आश्रित बच्चों से मिलकर बना होता है। इस प्रकार के परिवारों में अन्य रिश्तेदारों को सम्मिलित नही किया जाता है। इसमें बच्चें भी अविवाहित रहने तक ही रहते हैं। विवाह के बाद अपना स्वयं का नाभिक परिवार बना लेते हैं। इस प्रकार की परिवार की व्यवस्था अनेक जन जातियों में भी देखने को मिलती हैं। ऐसे परिवारों के सदस्य भावात्मक आधार पर एक दूसरे से घनिष्ट रूप से जुड़े रहते है। ऐसे परिवारों का आकार बहुत ही सीमित होता है, और इनका बच्चों के जीवन पर काफी रचनात्मक प्रभाव पड़ता है। आज अधिकांश देशों में परिवार में परिवर्तन की प्रवृति संयुक्तता से नाभिकता कि ओर है।

एकल परिवार अपने लम्बे अनुभव से गुजरने के बाद अपनी मौलिक त्रुटियों से भली-भाँति परिचित हो चुका है और बदलते समय की मुश्किलें एक बार फिर से संयुक्त परिवार के बारे में सोचने के लिए हमें मजबूर कर रही है। स्वतंत्रता और स्वच्छंदता पाने की आस में संयुक्त परिवारों से अलग होने वाली पीढ़ी आज स्वयं से यह पूछ सकती है कि इस आजादी को पाने के एवज में उसने क्या कुछ नहीं खो दिया है। एकल परिवार की एक मात्र जो सबसे बड़ी विशेषता है वह यह है कि यह व्यक्ति को अपनी पहचान बनाने और अपनी काबलियत सिद्ध करने के मौके उपलब्ध कराती है। लेकिन इसके बहुत सारे दोष भी हमारे सामने है। यहाँ अपनी कठिनाइयों, समस्याओं और दुख बांटने के सिवाय अपने जीवन साथी को और कोई सहारा नहीं मिलता और एक सीमा के बाद व्यक्ति को अकेले ही दुःख उठाने पड़ते हैं। परिणाम-स्वरूप समाज में अनेक ऐसी समस्याएँ सिर उठा रही है, तनाव एवं तनावजनित मानसिक रोग, डिप्रेशन एवं आत्महत्या आदि इसके कुछ ज्वलंत उदाहरण है। एकल परिवार प्रायः अपनी परम्परा से जोड़ने वाले उत्सवों एवं पर्व-त्यौहारों से कट जाते है और उन्हें अकेला होने का अहसास लगातार बना रहता है। एकल परिवार में सबसे अधिक खामियाजा बच्चों को भुगतना पड़ता है। एकल परिवार के कारण बच्चों को अपने सांस्कृतिक मूल्य विरासत में दे पाना मुश्किल हो जाता है।

[20] ''भारतीय समाजशास्त्र'' पृ. सं. 60–61

सांस्कृतिक मूल्यों को बच्चे अपने बड़े-बुजुर्गों से विरासत में ग्रहण करते हैं। एकल परिवारों में आने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए आज नये मॉडल के संयुक्त परिवारों की नींव रखे जाने की सख्त जरूरत है।[21]

समायोजन :-

समायोजन वह पथ है, जिस पर चलते हुए हम ऐसे वातावरण में जो कभी सहायक है, तो कभी जटिल है! और कभी हानिकारक है, अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करते हैं। हमारे समायोजित होने की प्रक्रिया केवल तभी घटित होती है, जब हमारी कुछ आवश्यकताएँ हो, जब हम उन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनेक मार्ग चुनते हैं, और जब पर्यावरण, जिसमें कि हमें संतुष्टियाँ ढूँढ़नी है, हमारे प्रति तटस्थ या विरोधी बना रहे।''[22]

आईजेनक के अनुसार - ''समायोजन वह अवस्था है, जिसमें एक तरफ व्यक्ति की आवश्यकताएँ होती है और दूसरी तरफ वातावरण के अधिकारों में पूर्ण संतुष्टि होती है अथवा समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा इन दोनों अवस्थाओं में सन्तोषजनक तालमेल होता है।''[23]

कॉलमैन के अनुसार - ''समायोजन व्यक्ति द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं कठिनाइयों का सामना करने के प्रयास का परिणाम है।''[24]

स्किनर के अनुसार - ''समायोजन एक अधिगम प्रक्रिया है।''[25]

गेट्स व अन्य के अनुसार - ''समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच सन्तुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिर्वतन करना है।''[26]

शैक्षिक उपलब्धि :-

व्यक्ति अपने जीवन में विभिन्न कियाओं के द्वारा अनेक प्रकार का ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करता है। वह ज्ञान एवं कौशल उसकी उपलब्धि कहलाती है।

---

[21] दैनिक भास्कर विचार अभिव्यक्ति'' 2008 पृ. सं. 6
[22] ''बात शिक्षा की वार्षिक पत्रिका'' 2006 बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महा., सरदारशहर, पृ. सं. 21, 60–61
[23] ''पाठक,पी.ड़ी. (2007):शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मुन्दिर आगरा, पृ.सं. 450
[24] आविदा, परवीन(2006) : शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार पृ.सं. 267
[25] आविदा, परवीन(2006) : शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार पृ.सं. 267
[26] पाठक,पी.ड़ी. (2007):शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मुन्दिर आगरा, पृ.सं. 450

मेकडेविड एवं हरारी – ***''मनोवैज्ञानिक उपलब्धि उसे कहते है जिसमें किया क्षमता, आक्रमणशीलता तथा प्रभुता का घनिष्ठ सम्बन्ध मानव व्यवहार में लक्ष्य निर्देशन की एक पद्धति से हो।''***

उपलब्धि के क्षेत्र भिन्न–भिन्न होते हैं, जैसे – एक व्यक्ति विज्ञान के क्षेत्र में, एक खेल के क्षेत्र में, एक सामाजिक क्षेत्र में, अपने कौशल की स्थापना करता है। वह कौशल स्थापना उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर की होती है, इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित ज्ञान का कौशल शैक्षिक उपलब्धि कहलाता है।

7. अध्ययन के उद्देश्य :–

1. एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
2. संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
3. शहरी एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण एकल परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
5. शहरी संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
6. ग्रामीण संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
7. एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
8. संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
9. शहरी एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
10. ग्रामीण एकल परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
11. शहरी संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
12. ग्रामीण संयुक्त परिवार के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
13. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों में समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
14. ग्रामीण एवं शहरी संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
15. ग्रामीण एवं शहरी एकल परिवार के विद्यार्थियों में समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

8. अध्ययन की परिकल्पनाएँ :-

1. एकल परिवार के छात्र-छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. संयुक्त परिवार के छात्र-छात्राओं में समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. शहरी एकल परिवार के छात्र-छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. ग्रामीण एकल परिवार के छात्र-छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. शहरी संयुक्त परिवार के छात्र-छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6. ग्रामीण संयुक्त परिवार के छात्र-छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
7. एकल परिवार के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
8. संयुक्त परिवार के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
9. शहरी एकल परिवार के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
10. ग्रामीण एकल परिवार के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
11. शहरी संयुक्त परिवार के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
12. ग्रामीण संयुक्त परिवार के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
13. संयुक्त एवं एकल परिवार के विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है।
14. ग्रामीण एवं शहरी संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों में समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है।
15. ग्रामीण एवं शहरी एकल परिवार के विद्यार्थियों में समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है।

9. <u>शोध के चर</u> :–

- स्वतंत्र चर – एकल परिवार के विद्यार्थी एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थी।
- आश्रित चर – समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि।

10. <u>जनसंख्या</u> :–

इस शोधकार्य में शोधकर्त्री के द्वारा अध्ययन को सफल बनाने हेतु चूरू जिले की समस्त तहसीलों (चूरू, रतनगढ़, सुजानगढ़, सरदारशहर, तारानगर तथा राजगढ़) के एकल परिवार व संयुक्त परिवार के माध्यमिक स्तर के 600 विद्यार्थियों को लिया जायेगा।

11. <u>न्यादर्श</u> :–

शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श में चूरू जिले की छह तहसीलों के संयुक्त एवं एकल परिवार के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के 600 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।

क0सं0	वर्ग	संयुक्त परिवार	एकल परिवार
1	शहरी	150	150
2	ग्रामीण	150	150
	कुल	**300**	**300**

12. <u>शोध विधि</u> :–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का उपयोग किया जाएगा, क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है, इस विधि द्वारा प्राप्त प्रदत प्रमाणिक एवं विश्वसनीय होते हैं, तथा उनकी सत्यता अभिष्ट होती है।

13. <u>शोध के उपकरण</u> :–

क्र.सं.	उपकरण का नाम		निर्माणकर्त्ता का नाम
1.	समायोजन अनुसूची मापनी	:	ए. के. पी. सिन्हा एवं आर. पी. सिंह
2.	शैक्षिक उपलब्धि मापनी	:	स्वनिर्मित मापनी।

14. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :-

प्रस्तुत शोधकार्य में एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा -

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. क्रान्तिक अनुपात मान
4. सहसम्बन्ध।

15. अध्ययन का सीमांकन :-

प्रस्तुत शोधकार्य चूरू जिले की छह तहसीलों के संयुक्त एवं एकल परिवार के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के 600 विद्यार्थियों तक सीमित रहेगा।

16. दत्त विश्लेषण एवं विवेचन

इस अध्याय में परिकल्पनाओं के अनुसार एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण किया जायेगा तथा प्राप्त दत्तो का विवेचन किया जायेगा।

17. परिकल्पनाओं के अनुसार परिणाम, निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्याय में परिकल्पनाओं के अनुसार एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर परिणाम, निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किए जायेंगे।

****

BIBLIOGRAPHY:-

(A) हिन्दी सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. अस्थाना, विपिन (1994) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा –2 उ. प्र. पृ.स. 170

2. अग्रवाल, ईश्वर प्रकाश एवं अनिता, (1995) : ''बाल विकास एवं शैक्षिक क्रियाएँ'' आर्य बुक डिपो करोल बाग, नई दिल्ली, पृ. सं. 137.

3. अरोड़ा, रीता एवं मारवाह,सूरेश (2001) : ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी के आधार'' 23 चौड़ा रास्ता, जयपुर पृ.सं.43

4. आचार्य, पं. शर्मा श्रीराम (1995) : ''भारतीय संस्कृति के आधारा भूत तत्व'' 'अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा प्रथम सस्करण, पृ.स. 3, 136, 3. 138, 4.174

5. आचार्य, पं. शर्मा श्रीराम (1996) : ''शिक्षा एवं विद्या,''अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा,'' प्रथम सस्करण, पृ.स. 114,1.37,1.104.2. 24, 3.13,3.35

6. कपिल एच. के.(2004) : ''अनुसंधान विधियाँ, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस, 4/230, कचहरी घाट, आगरा

7. गुप्ता, एम.एल. एवं शर्मा डी.डी. (1997) : ''भारतीय समाज'' साहित्य भवन पब्लिकेशसन्स, आगरा पृष्ठ संख्या – 84, 95, 96, 149,

8. गुप्त, नत्थूमल (1997) : ''संस्कृति के सात सोपान''

9. चौबे, सरयूप्रसाद (1956) : ''बाल विकास'', भारत पब्लिकेशन आगरा पृ. सं. 165, 171, 173

10. जायसवाल, सीताराम (1992) : बाल मनोविज्ञान, संवेग तथा अभिप्ररेणा का विकास, विनोद पुस्तक मंदिर बरगरा पृष्ठ संख्या–108,109,114, 118,119,120

11. जरशिल्ड, ए.टी. (1977) : ''किशोर मनोविज्ञान'', बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृष्ठ सं. 21,431–33,

12. देसाई, ए. आर.(1986) : ''भारत में शहरी परिवार और परिवार नियोजन''

13. पारीक, मथुरेश्वर, (2002) : ''बालविकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध'' रिसर्च पलिकेशन्स त्रिपोलिया बाजार जयपूर (2002) पृ. 99, 161, 177

14. पाण्डेय, सत्यप्रकाश एवं शर्मा, रजनी (2007) : ''शिक्षा एवं भारतीय समाज'' चोड़ा रास्ता जयपुर

(B) हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँः–

1. आचार्य, शर्मा श्रीराम पं. : 'शिक्षा एवं विद्या' 'अखण्ड ज्योति संस्थान,मथुरा', प्रथम संस्कारण, (1996) पृ. स. 114, 1.37, 1.104. 2. 24, 3.13, 3.35

2. आचार्य, शर्मा श्रीराम पं. : 'चरित्र निर्माण प्रधान शिक्षा पद्धति विकसति करनी होगी' अखण्ड ज्योति अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा (2003) वर्ष–66 अंक 6 पृष्ठ संख्या– 38–39

3. आचार्य, शर्मा श्रीराम पं. : 'नैतिकता की नीति, स्वास्थ्य की उत्तम डगर', अखण्ड ज्योति' अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, (2004) वर्ष 67, अंक–9 पृश्ठ संख्या– 13–14

4. आचार्य, शर्मा श्रीराम पं. : 'मनस्थिति को सुव्यवस्थित बनाए' युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि, मथुरा (2004) वर्ष–42, अंक–6 दिसम्बर, पृष्ठ संख्या–25–26, 29,35

5. आचार्य, शर्मा श्रीराम पं. : 'बच्चों को संस्कार माता–पिता ही दे सकते है' युग निर्माण योजना' गायत्री तपोभूमि, मथूरा (2004) वर्ष–41, अंक–9 मार्च, पृष्ठ– संख्या 15–16

(C) हिन्दी शब्द कोष :-

1. अग्रवाल, नगेन्द्र एवं अग्रवाल पद्मा : मानवीय परिभाषिक कोष (मनोविज्ञान खण्ड) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली–110036

2. कृष्णानन्द (संयोजक सम्पादक मण्डल) वि. सं. 2014 : संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर कोष संस्थान कोश विभाग, नागरी प्रचारणी सभा वाराणसी (उत्तरप्रदेश)

3. बाहरी, हरदेव (1969) : वृहत्त अंग्रेजी–हिन्दी कोष : भाग–2 ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (उत्तरप्रदेश)

डॉ. (श्रीमती) मनोज
शोध निर्देशिका

संगीता गुप्ता
शोध छात्रा